IJAER/May-June 2019/Volume-8/Issue-3 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

रामलीला का दृष्यपक्ष–एक कलात्मक समीक्षा

Akansha Singh
Research scholar Mewar University

Dr. Chitrlekha Singh
Emeritus professor and dean humanity social science; fine art Yog& astrology in the land of bhakti & shakhi chittorgarh in Mewar University

सार

सर्वप्रथम जब इस धरती पर मनुष्य का जन्म हुआ तब साथ ही साथ कला का भी जन्म हुआ क्योंकि बिना कला जीवन पूर्ण नहीं माना जाता है। मानव जाति अपनी अभिव्यक्ति को ललित कला के माध्यमों से अपना सुख का साधन बनाया। संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला, नृत्यकला, लेखनकला आदि का निर्माण मानव विकास के साथ ही विकसित हुआ भगवान श्री राम की कथा विष्व की अनूठी प्राचीनतम कथा है। राम कथा से प्रभावित हो कर ही रामलीला का विकास हुआ। क्योंकि अगर रामकथा न होती तो षायद राम की लीला प्रसंग भी नहीं होता। आज जनता जिस रामलीला के प्रसंगों को देखती हो वह रामकथा के द्वारा ही मनुष्य के बीच में विघमान है। रामकथा जब रामलीला बन कर जब मंच पर प्रस्तुत होती है। तो वह उस समय ऐसा प्रतीत होता है कि मानो भगवान श्रीराम मंच पर प्रकट हो गये हैं। जनता में उनके प्रति इतनी भाव भक्ति विद्यमान है। कि वह मंच के नीचे से ही उनके चरण स्पर्ष करते रहते हैं और जय श्री राम का जयकारा लगाने लागो है। इतनी भक्ति देख कर मन बहुत ही भावुक हो जाता है। क्योंकि जिनकी भाव भक्ति भारत देष में है और यहां की सांस्कृतिक पुर्ण विष्व में प्रसिद्ध है। रामलीला में पात्र केवल अभिनय नहीं करते बल्कि वह वह इस पात्र को जीते हैं। वह इतने भावपूर्ण हो जाते हैं कि कभी–कभी मंच के पीछे वह उन दिनों जब रामलीला होती है तो वह अपना दिनचर्या भी पात्र के अनुसार ही रहते भी हैं रामलीला केवल मनोरंजन का साधन नहीं है बल्कि वह अपनी परम्परा एवं संस्कृति को जीवित रखने का माध्यम है क्योंकि इसके द्वारा ही पीढ़ी दर पीढ़ी अपने आने वाले भविष्य के लोक कल्याण में मनुष्य भाग ले सके और अपनी पारंपरिक संस्कृति को बनाये रखे सके। आने वाली पीढ़ी भी इस में रूचि लेती रहे उन्हें अपने परम्परा एवं सांस्कृतिक से अवगत कराया जा सके।

प्रस्तावना

रामलीला में पात्र मखमल गोटा और कला बत्तू से बने वस्त्रों को तथा तेज चटकीले रंगों से बने मुकुट आदि पर बने चित्र जो विभिन्न चमकीले रंगों द्वारा बनाया जाता है और इनको बनाने में वर्ष भी लग जाते हैं। विभिन्न तरह के रंगों द्वारा पात्र को सुन्दर बनाते हैं। रामलीला जब षुरू हुई बहुत ही सन–साधन नहीं हुआ करते थे। तब कलाकार खनिज पदार्थ एवं खनिज रंगों के द्वारा ही अपने श्रृंगार, मंच सज्जा किया करते थे। क्योंकि तब धन का भी आभाव था बस या तो राम की भक्ति में लीन भक्ति गाण वह पूरे उत्साहो रामलीला की प्रस्तुति में लग जाते थे।

कोपला, गेरू, चुना आदि का प्रयोग श्रृंगार से किया जाता है। जिससे कला का विकास और उसके प्रति लोगों का विष्वास, लगण, स्नेह देखने योग्य होता है। भारत की मिट्टी में परम्परा एवं संस्कृति, रंग, कला विद्यमान है। रामलीला विभिन्न रूपों, भाषा में खेली जाती है और वह चाहे जो व्यक्ति हो रामलीला मंचन के लिए दूर–दूर से लोग कई महीनों पहले से ही उस स्थान पर आ जाते हैं जहां रामलीला प्रस्तुत होने वाली होती है जबकि रामलीला का आयोजन होता है। उस समय कोई व्यक्ति बड़ा व छोटा नहीं होता है प्रत्येक व्यक्ति मिल जुल का प्रत्येक कामों को करते हैं मानो ऐसा लगता कि बस सब साथ मिलकर एक रामलीला को जीते हैं। रामलीला उत्तरी भारत में परम्परागत रूप से खेली जाती है। रामलीला केवल अब भारत में ही नहीं बल्कि विदेषों में भी खेली जाती है। विदेषी भी भारत की संस्कृति से प्रभावित हो कर और देखकर अपने अपने देष में रामलीला मंचन षुरू कर दिया जिससे यह प्राप्त होता है भाषा की मिट्टी की विरासत एवं संस्कृति केवल देष में ही नहीं बल्कि विदेषों में भी पनप चुकी है। यह बहुत गर्व की बात है भारत में सबसे पूरानी रामलीला 1865 में षुरू हुई पहले लोगों के पास साधन नहीं हुआ करते थे। वह सब कलाकार मिलकर मषाल आदि का प्रयोग करके रामलीला करते थे। परंतु धीरे–धीरे लोगों ने रामलीला को और सुन्दर आकर्षण बनाना षुरू कर दिया। बाद में रामलीला में श्रृंगार चमकदार वस्त्र मंच को भी चमकदार पर्दे आदि से

सजाया जाने लगा। जिससे जनता के बीच रामलीला का आकर्षण और बढ़ाने लगा और लोग दूर–दूर से रामलीला देखने आने लगे। और अगर वर्त्तमान की बात करें तो रामलीला बहुत ही भव्य उत्सव की तरह ही रामलीला बहुत ही भव्य उत्सव की तरह ही रामलीला मंचन होने लगा है। विभिन्न नगरों, कस्बों आदि में रामलीला मंचन होता है। प्रत्येक नगर की अपनी एक अलग–अलग पहचान होती है। विभिन्न नगरों के भाषा अलग होने के कारण रामलीला भी अलग–अलग भाषा में होती है और कहीं कहीं पर श्रृंगाार भी अपने पारम्परिक ढंग किया जाता है। जिससे कि वह अपने सांस्कृतिक को समझ सकते हैं भारत विभिन्न राज्यों की रामलीला को सजाया और मनाया जाता है। रामलीला एक सांस्कृतिक पर्व है। जिससे लोग अपने जीवन में सही मार्ग समाज के लोगों के लिए संदेष पूर्ण हो कि झूठ, अन्याय और अत्याचार पर सत्य के साथ रहने की प्रेरणा देती है। रामकथा की मंचन की परम्परा उतनी ही प्राचीन है। जितने स्वयं श्रीराम हैं। रामलीला में दृष्यात्मक एवं कलात्मक रूप कलाकारों की वस्त्र, मुख सज्जा, रामलीला का मुकुट का चित्रकला, अस्त्र–वस्त्र, वेषभूषा पर चित्रकला तथा बहुत ही सुंदर ढंग से बनाये जाते हैं और बहुत दूर–दूर से मंगवाये जाते हैं जिससे कि रामलीला होने से कोई कमी न हो पायें इसी लिए तो रामलीला जब होती है तो मानो स्वयं श्रीराम मंच पर प्रकट हो गये हैं। रामलीला भारत के विभिन्न राज्यों में दषहरे के कुछ दिन पहले से नगर–नगर और गांव–गांव में रामलीला की धूम मच जाती है। भारत का षायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जिसने रामलीला प्रदर्षन न देखा ही प्रत्येक व्यक्ति के मन में श्रीराम के प्रति आस्था के रूप में विद्यमान है। उनके जीवन की लीला देखने के लिए लोग उत्साहित रहते हैं। सितम्बर से अक्टूबर के महीने में दषहरे के अवसर पर विभिन्न स्थानों पर पंद्रह दिन से लेकर एक महीने तक रामलीला का प्रदर्षन होता है। यह नाट्य–रूप समूचें समुदाय की धार्मिक तथा कलात्मक और दृष्यात्मक सांस्कृतिक की अभिव्यक्ति है। इसी लिए जनता के बीच इसकी लोकप्रियता आज भी कम नहीं है। जनता जैसे पहले रामलीला को देखने के लिए लोग रात बैठे रहते थे आज भी लोग मंचन देखने के लिए उत्साहित रहते हैं और उतने दिन वह अपने सारे काम छोड़ कर बस रामलीला में ही मग्न हो जाते हैं।

रामलीला जब षुरू होती पहले सभी कलाकारों की आरती होती है। मंचन षुरू होने से पहले कलाकारों को भगवान स्वरूप पूजा जाता है मानो स्वयं भगवान पृथ्वी पर उतर कर सभी को आषीर्वाद देते हो तभी लोग में आज भी रामलीला के प्रति इतनी श्रद्धा एवं भक्तिभाव है। रामलीला मंच पर प्रत्येक दृष्य के पर्दे लगाए जाते हैं। जिससे मंचन में प्रत्येक दृष्य को सजीव बनाने के लिए पर्दे पर कलाकारों द्वारा चित्राकलन किया जाता है। जिससे राम के जीवन कथा को वास्तविक रूप दिया जा सके। जिससे कि रामलीला में चार चॉद लग जाता है। रामलीला में वेषभूषा का अपना महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि वेषभूषा के द्वारा ही कलाकार रामलीला को आकर्षित बनाते हैं क्योंकि बिना वेषभूषा के रामलीला में वह आकर्षण नहीं आ सकता है। क्योंकि वेषभूषा के द्वारा ही विभिन्न कथा एवं पात्रों को प्रस्तुत किया जाता है। क्योंकि राम जी के वनवास के समय वह केवल साधुओं के जैससी धोती पहने होते हैं। पीले रंग की तथा राम लक्ष्मण के बाल बड़े–बड़े रखे जाते हैं। इसीलिए रामलीला वस्त्रों का अपना अलग स्थान है। इसीलिए रामलीला की सजावट भव्य रूप से देखने योग्य होती है। वह रामलीला में प्रयुक्त सभी प्रकार की वस्तुओं को पूर्ण रूप से बनाते हैं। रामलीला करने के लिए पहले से ही चित्रकार पहले से ही तैयारी षुरू कर देते हैं। वह रामलीला में प्रयोग होने वाले पर्दे, कपड़े, अस्त्र,–षस्त्र, आभूषण, साड़ियॉ, मुकुट, मुखौटे आदि को बनाया तथा उन्हें राज्य के अनुसार अपने पारम्परिक तरीकों से उस पर चित्रकारी करते हैं ओर जितनी मेहनत वह पर्दे के आगे करते हैं उतनी मेहनत वह पर्दे के पीछे करते हैं। रामलीला मंचन में अपना योगदान देते हैं और मेहनत और लगन के साथ रामलीला मंचन को पूरा करते हैं। भारत की धरती का एकाएक धरती का राजकज राममय है। राम हमारी संस्कृति के प्रतीक है। वही आस्था संस्कृति रामलीला के रूप धरती है। गजराज की लीला का, लीला एक आस्था के प्रस्थान

प्रकटन की। आस्था–आलम्ब के दर्षन की ऋषि–मार्या के लिए जीवन्तिनी रज यह रज मानवमात्रत्र के लिए कल्याणकारिणी रज है। आस्था–रूप रामलीला उनके प्रतिबिम्ब के आभास हैं। उस आभास के कल्याण–रूप की खोज ही लीला है। लीला किसी के भी कृत कार्यों का अभिनय अनुकरण है। जिसका व्यापक अर्थ है उससे उस अतीत को वर्त्तमान संग संयोजित करना। रामलीला की अन्य गोमापात्राये इस प्रकार आयोजित होती है।

मुकुट पूजनः

श्री रामलीला की सबसे पहली षोभायात्रा गणेषजी की सवारी के रूप में मुकुट–पूजन के दिन निकलती है। मुकुट–पूजन रामलीला के प्रारम्भ से एक दिन पूर्व होता है, जिसमें सभी स्वरूपों के मुकुट, देवताओं के तथा अन्य पात्रों के मुखौटे (चेहरे) व अस्त्र–षस्त्र सिंहासन पर संयोजे जाते हैं और उनका विधि–विधान से पूजन होता है हवन के साथ रामलीला के पदाधिकारी श्री रामलीला के अनुष्ठान को सानन्द सम्पन्न होन की प्रार्थना करते हैं तथा श्री रामलीला सभा द्वारा जो स्वरूप या पात्र लीलाभिनय के लिए मनोगीत किये जाते हैं उन सबको वनीन वस्त्र धारण कराकर उनका वरण–बन्धन होता है, भोग लगाया जाता है। इस

धार्मिक अनुष्टान के बाद सायंकाल ऋद्धि–सिद्धि के साथ श्री गणेषजी की सवारी निकाली जाती है। गणेषजी की सवारी निकाली जाती है। गणेषजी के पीछे एक सिंहासन पर वरण किये गये स्वरूप रामलीला के परम्परागत केसरिया वस्त्रों में नगर भ्रमण करते हैं।

ताड़का वधः

ताड़का वध की लीला रात्रि में मंच के साथ–साथ सायंकाल विश्रान्त बाजार में भगवान द्वारिकाधीष के मंदिर के नीचे भी होती है। श्रीरामजी की षोभायात्रा विष्वामित्र जी के साथ श्रीकृष्ण जन्म स्थान से चलती है तथा चौक बाजार में महाराज कावलीसिंह जी के मंदिर से आकर ताड़का व मारीच सुबाहु की ठेली श्रीरामजी के आगे चलने लगती है।

द्वारिकाधीष मंदिर के नीचे डोला से उतर कर बाजार में ताड़का से युद्ध करके श्रीराम उसका वध करते हैं। इस अवसर पर एक विषालकाय (कागज) का ताड़का का पुतला भी लीलास्थल पर प्रदर्षित किया जाता है जिसमें श्रीराम बाण मारते हैं। ताड़का–वध के उपरान्त पूजन, आरती के साथ श्री रामजी का डोला आगे बढ़ जाता है और अहिल्या–उद्धार की लीला के बाद सवारी जन्मभूमि लौट आती है। रात्रि को पुनः ताड़का–वध की पूरी लीला मंच पर होती है।

श्रीराम वनवासः

श्रीराम वनवास की लीला भी मंच पर नहीं होती। जन्मभूमि से मुनिवेष में श्रीराम–लक्ष्मण, जानकीजी की सवारी प्रारम्भ होती है। वहीं वषिष्ठजी से संवाद होता है। उसके बाद सुमन्तजी के साथ पैदल यात्रा प्रारम्भ होती है और

स्वामीघाट पर श्रीराम निषादराज का आतिथ्य स्वीकार करते हैं। यहीं सुमन्तजी को अयोध्या लौटाकर श्रीराम विश्राम घाट पधारते हैं। यहॉ केवट–संवाद सम्पन्न होने के उपरान्त प्रभु नाव से विराजते हैं और यमुनाजी में नौका–विहार करके बंगाली घाट पर उतरते हैं। यहां गंगाजी श्री जानकीजी को आषीर्वाद देती हैं। इसके उपरांत ठेली में वनयात्रा प्रारम्भ होती है। जयराम दासजी के बाड़े में ऋषि भारद्वाज से भेंट करके श्री रामजी कलक्टरगंज में पधारते हैं और यहां ग्राम–वधूटियों व जानकीजी का संवाद होता है। यहां से चलकर घीयामण्डी के श्री रामचन्द्रजी के मंदिर में श्रीराम–वाल्मीकि संवाद होता है। यहीं वनवासी राम भोजन करते हैं। इसके उपरान्त प्रभु चित्रकूट पधारते हैं और यहीं आरती के साथ वनगमन लीला का विराम हो जाता है। रात्रि को इस दिन मंच पर महाराजा दषरथ के स्वर्गवास तथा श्री भरत के अयोध्या पधारने की लीला होती है।

भरत–मनावनः

राम–वनवास के दूसरे दिन कावलीसिंहजी के मंदिर से घोड़ों पर भीलों के साथ निषाद–राज की सवारी पूरे नगर में घूमती है। यह भील लोग नगर में निम्नलिखित नारे लगाते व मुॅह पर हाथ लगा कर भॉति–भॉति की ध्वनियॉ निकालते हैं इनका मुख्य हथन यह है–

अरे भरतजी श्री रामजी सों लड़के वन में जावा सो मत जाये दीजो रे। अरे घाटन कू रोक लेउ, नावन कू डोब दीजो रे। अरे मॉ के कुल ककू दाग न लगाइयो रे भूतनी का।

भीलों की यह सवारी पूरे नगर में घूमकर लाल दरवाजे पर आती है और उधर से गुरूजी तथा अयोध्यावासियों के साथ भरतजी की सवारी गोविन्दगंज से आती है, तब लाल दरवाजे पर निषादराज की भरत जी से भेंट की लीला होती है और फिर निषादराज को आगे करके यह पूरा दल चित्रकूट पहुंचता है। यहां चित्रकूट पर श्रीराम भरतजी के मिलन की मंचीय लीली होती है। मथुरा में लीला 'भ्रत–मनावन' की लीला के नाम से प्रसिद्ध है, इस लीला की मार्मिकता व भावुकता बड़ी हृदयग्राही है। मथुरा में यह लीला जिस प्रकार सांगोपांग रूप में होती है वैसे पूरे देष में कहीं भी नहीं होती। इस दिन केवल भावुक–भक्तों की टोली ही प्रायः लीला देखने आती हैं। ऐसे भक्तगण जो कभी रामलीला में नहीं आते वह भी वर्ष में एक दिन इस लीला को देखने मथुरा के चित्रकूट पर अवष्य पधारते हैं।

वन की लीलाः

मथुरा में अयोध्या की लीलायें श्रीकृष्ण जन्मभूति पर तथा वन की लीलायें चित्रकूट (श्री रामलीला सभा के स्थल) पर होती है। पहले वन की लीलायें दिन में महाविद्या मैदान में तथा पुनः रात्रि में मंच पर चित्रकूट पर होती थी, परन्तु पिछले वर्षों में महाविद्या की दिन की लीलाओं को कम कर दिया जाता है। अब महाविद्या मैदान में नवमी व विजयादषमी की दो लीला ही दिन में होती है जो विषाल मेले का रूप धारण कर लेती है। विजयादषमी को महाविद्या के मैदान में रावण–वध का मेला मथुरा जिले का सबसे बड़ा मेला माना जाता है। इसे और अधिक महत्व देने के कारण गतवर्ष से दषहरा को रात्रि को होने वाली चित्रकूट की लीला भी बन्द कर दी गई है।

महाविद्या मैदान की रामलीलाः

पहले महाविद्या के विषाल मैदान में सीताहरण से लेकर रावण–वध तक की लीला 6 दिन में की जाती थी जो दिन मुॅदने के साथ समाप्त होती थी। बाद में दिन में दिन में होने वाली लीला पुनः रात्रि में चित्रकूट पर की जाती थी, इन दोनों लीलाओं के प्रस्तुतीकरण की षैली में बड़ा अन्तर था। रात्रि की लीला जहॉ संवाद और अभिनय प्रधान थीं वहां महाविद्या मैदान की लीला दृष्य प्रधान लीला धार्मिक मेले के रू‍प में होती थी। मेला के प्रेमी दर्षक भारी संख्या में इन लीलाओं में जाते थे और बालकों व खौमचे वालों की अछी–खासी भीड़ हो जाती थी। चरख वाले व खेल–तमाषे वाले भी इस मेले में उपस्थिति होते थे। इसलीला–प्रदर्षन की विषेषतायें निम्नलिखित थी– महाविद्या की लीलाओं की प्रदर्षन–षैली चित्रकूट की बगीची से सजकर प्रतिदिन श्री रामजी का डोला महाविद्या मैदान में जाता था। बॉदर गण उसके आगे पेंतरा दिखाते उछलते–कूदते चलते थे, बीच–बीच में जहॉ डोला रूकता था

श्रीराम–महिमा व लीला के अनुरूप पदावली गाई जाती थी। महाविद्या मैदान में पहुॅचते ही द्वार से बाजों के साथ पहले श्रीराम–लक्ष्मण अपने परिकर के साथ धनुष–बाण संधाते पूरे मैदान में परिक्रमा (फेरी) करते थे जिससे चारों ओर बैठे सभी दर्षकों को निकट से भगवान के दर्षन का आनन्द प्राप्त होता था। श्रीरामजी की फेरी के बाद राक्षसराज रावण अपने पूरे परिकर के साथ मैदान में ढाल–तलवार पर हाथ दिखाता हुआ फेरी करता था। इसके बाद पूरा राक्षस–दल विषेष रूप से एक ऊॅचे मचान पर पृथक से बैठता था। श्री सीताजी के लिए तीन दरवाजों की सुनहरे कागज से मढ़ी स्वर्ग की लंका पृथक से बनाई जाती थी, जिसमें सीताहरण के बाद रावण–वध त कवह प्रतिदिन लीला के आरम्भ से अन्त तक विराजती थी। रावण–वध के उपरान्त इस लंका को वानर–दल लूट लक जाता था।

इस लीला में प्रतिदिन नारद, षंकर–पार्वती, ब्रह्मा, गणेष, स्वामी कार्तिकेय आदि देवता सजाये जाते थे और उनके वाहनों के ढॉचे से बनाकर कागज से मढ़कर नादिया, चूहा, मयूर आदि बनाये जाते थे। जिनका बीच का भाग खोखला रहता था जिसे वह डोरी के सहारे कमर में डालेर प्रतिदिन बाड़े में घूमकर लीला में दर्षकों को आकर्षित करते थे। नाक कटने के बाद सूर्पनखा भी प्रतिदिन कटी नाक का चेहरा लगाये लीला में घूमती थी तथा दर्षकों के पास जाकर अपनी कटी नाक दिखाकर उनके ऊपर नाक फेंकने का अभिनटन करती थी। जिस दिन जिस पात्र की विषेष आचष्यकता होती, वह लीला के आरम्भ से अन्त तक बाड़े में घूमकर दर्षकों का आकर्षित करता था। उदाहरण के लिए लक्ष्मण–षक्ति के दिन एक सेवक के कन्धे पर जड़ी–बूटियों की बॅहगी सजाये एक वैद्यजी आरम्भ से अन्त तक बाड़े में घूमते। उनके पास छोटी–छोटी चूरन की पूड़ियॉ रहती थी। जिस दर्षक पर उनकी कृपा होती उसे वह औषधि के रूप में एक पुड़ियॉ रहती थी। जिस दर्षक पर उनकी कृपा होती उसे वह औषधि के रू‍प में एक पुड़ियॉ पकड़ा देते थे। इस प्रकार पूरा रामलीला का विषाल मैदान ही पात्रों का रंगमंच रहता था और वह अनेक प्रकार से चारों ओर के दर्षकों को आकर्षित करते थे। मुख्य लीला के साथ–साथ वह पात्र अपने क्रिया–कलापों से अलग से एक आकर्षक लीला का आंषिक रूप से पृथक निर्माण करते रहते थे।

इस लीला के पात्रों के संवादों पर जोर न देकर प्रदर्षन की भव्यता पर विषेष जोर था। उनका दिखनोट व बलिष्ट व्यक्तित्व होना आवष्यक था। पहले पात्रगण स्वयं स्वेॅछा से इस लीला में आग्रहपूर्वक अभिनेता बनते थे। उस्ताद लखतपराय, लाल दरवाजे अखाड़े के पहलवान रामदयाल के वानर बनते थे। कुछ समय विख्यात चंदन पहलवान भी इस लीला में हनुमान बने थे। नगर के किषोर भारी संख्या में वानर व राक्षस बनते थे जिन्हें राम लीला से पोषाक (वर्दी) मिलती थी। बहुत से लोग रामलीला के वर्दी न लेकर स्वयं अपनी वर्दी बनवाकर लीला में बनना गौरव की की बात समझते थे। श्री रामादल व रावणदल की दैनिक फेरी लग जाने के बाद एक लम्बी काली डोरी बीच में तान दी जाती थी। जिसके एक ओर रामादल के किषोर व दूसरी ओर रावण–दल के किषोर जमा होकर टाट की गेंदो को परस्पर उछालकर गेंदवॅची खेलती थे। इसके बाद ही लीला प्रारम्भ होती थी।

यह लीला, जैसा हम कह चुके हैं, दृष्य प्रधान है। उदाहरण के लिए लंका–दहन को ही लें तो हनुमानजी समुद्र तैरकर पार जाने के स्थान पर बाजों के साथ पूरे बाड़े कस चक्कर लगाकर मार्ग में लंकनी को मारकर रावण के आगे होकर सीधे सीताजी के पास पहुॅचते थे। सीताजी से चौपाइयों के आधार पर संक्षिप्त संवाद होता, परन्तु वृक्षों की डाली से राक्षसों के मारते हुए उन्हें बाजें के साथ बाड़े की पूरी फेरी लगानी पड़ती थी। इस दिन जलने वाली लंका अलग सम बनाई जाती थी। रावण द्वारा पूॅछ में आग लगवा देने पर हनुमान पूॅछ के स्थान पर जलते हुए बॉस को हाथ में लेकर फिर बाजे के साथ फेरी लगाकर लंका को जलाते थे, सीताजी से बहुत संक्षिप्त संवाद के बाद वह फिर वापिस लौटते व वानरों के साथ पुनः श्री रामजी से आ मिलते थे। श्रीरामजी के हनुमानजी से गले मिलने के साथ ही यह लीला समाप्त हो जाती थी। इस प्रकार इस लीला की प्रदर्षन पद्धति रात्रि की मंचीय लीला से सर्वधा पृथक है। उछल–कूद, दौड़–भाग तथा नित्य किसी न किसी पुतले का जलना व आतिषबाजी इस लीला के आकर्षण हैं। सीताहरण कि पहले दिन षरभंग ऋषि का एक छोटा–सा पुतला षरभंग आश्रम से श्रीराम से विदा होन के उपरान्त तथा कागज का जुटायु का कलेवा लीला समाप्ति पर जलाया जाता था। अब भी नवमी के दिन लीला में मेघनाद व सुलोचना के पुतले जलाये जाते थे तथा दषहरा के दिन अहिरावण व रावण के हॅसते हुए पुतलों दाह के साथ्ज्ञ जो आतिषबाजी होती है उसे देखने दमर–दूर की जनता लीला में आती है। राम–रावण का रथों का युद्ध भी मथुरा में दषहरा की विषेषता है। पहले यह युद्ध बग्गियों में होता था परन्तु जब से रईसों ने बग्गी के स्थान पर मोटर रखना आरम्भ कर दिया, तब से यह युद्ध 2 ट्रकों को विषालकास रथों के रू‍प में सजाकर होता है। इस लीला के अनेक ऐसे आकर्षण हैं जो भीड़ को एकत्रित करने की भारी क्षमता रखते हैं। उदाहरण के लिए इस लीला

में मेघनाद का कागज का विषाल मस्तक रामादल से एक भारी मॉचे पर लादकर सुलोचना चलती हैं तो कई मजदूर उस मॉचे को उठाते हैं और उस कागज के विषाल सिर पर दो–दो हाथ ऊॅची कूदकर सुलोचना 'हाय राजाजी तुम कहॉ गये' कहकर विलाप करती हुई कूदती है तो दर्षक उसमें बड़ा रस लेते हैं। करूणा का वातावरण मधुर हास्यय की सृष्टि करने लगता है। इस प्रकार महाविद्या की इस लीला का निरालापन अपना अलग ही रंग रखता है।

खेद है कि जीवन की व्यस्तता, बढ़ती हुई मॅहगाई तथा बगीची–अखाड़ों की परम्परा के नष्ट हो जाने के कारण लीला में बलिष्ट पात्रों के अभाव ने इस लीला के स्वरूप को संकुचित कर दिया है। 6 दिन के स्थान पर अब यह लीला केवल अंतिम दो दिन ही महाविद्या मैदान में हो पाती है जो उस प्राचीन परम्परा का स्मरण बनाये हुए है। अब इस लीला में माइक का प्रयोग भी होने लगा है जिसमें इसकी मूकता में कुछ वाचालता का भी समावेष हो गया है और लीला संबंधी वर्णन या कुछ संवाद भी अब इसमें सुनाई पड़ने लगा है।

रात्रि की मंचीय लीला

साहित्यिक वैभवः मथुरा की रामलीला की विषेषताओं, षोभा यात्राओं व दिन की लीला के सामान्य परिचय के उपरान्त हम अब रात्रि को होने वाले लीला–प्रदर्षन पर दृष्टिपात करना चाहते हैं। मथुरा की रात्रि की लीला का आधार यद्यपि रामचरित मानस है, परन्तु इस लीला में ब्रजभाषा–साहित्य के प्रभूत मात्रा में रचित राम–साहित्य का प्रयोग सदा से होता रहा है। गीतावली, कवितावाली, महाकवि केषव की राम–चन्द्रिका, हनुमानाटक आदि के साथ–साथ नाभादास, रामसखे, रतनहरि, रसिक, बिहारी, महाराज, रघुराज सिंह, कौतुक, दत्तू आदि। अनेकानेक कवियों के छन्दों के साथ–साथ स्थानीय कवियों ने भी श्री रामलीला के साहित्य–वैभव को बढ़ाया है। जैसा कि हम कह चुके हैं श्री राधाकृष्णजी ढुलकिया जो रामलीला के कर्णधारों में थे–स्वयं कवि थे। उनके भी कुछ छंद लीला–साहित्य में सम्मिलित है। इन पंक्तियों के लेखक की भी कुछ रचनायें यथा आवष्यकता लीला से जुड़ी है। मथुरा की रामलीला के संवादों में समाहित ब्रजभाषा–साहित्य के नवनीत ने इस लीला के गौरव स्वरूप को परिपुष्ट किया है। धनुष–यज्ञ में राजाओं के संवाद, रावण–बाणासुर प्रसंग, लक्ष्मण परषुराम तथा अंगद–रावण संवाद जैसे प्रसंगों को इस दृष्टि से बेजोड़ कहा जा सकता है।

नृत्य और संगीतः मथुरा की रामलीला के उदय से पूर्व ही ब्रज का राम रंगमंच विख्यात हो चंका था अतः रामलीला पर इ समंच का प्रभाव पड़ना सर्वथा स्वाभाविक था। रास में जिस उत्साह से कृष्ण–जन्म के उपरान्त नन्द–महोत्त्सव मनाया जाता है। रामलीला में भी उसी के अनुकरण पर रामजन्मोत्सव का आयोजन पूरे नृत्य संगीच के वातावरण में होता है।

ढॉढा–ढॉढी प्रसंग में तो रस की पदवाली भी कुछ फेर के साथ रामजन्म की पदवाली में आ गई है। साहित्यिक–सौन्दर्य तथा नृत्य औश्र गायन का पूर्ण वैभव मथुरा की पुष्ट–वाटिका लीला में साकाार होता है। मथुरा में मंच की यह लीला भावपूर्ण और सरस है वैसी कदाचित ही कहीं होती हो। लीला–प्रदर्षन की षैली पर रास का गहरा प्रभाव है।

यही कारण है कि मथुरा की रामलीला में रामायण–पाठ एक ही धुन में लगातार वाराणसी की ''नारद–वाणी'' के ढंग से नहीं होता। यहॉ रास की भॉति संवादों के साथ भाव के अनुसार विभिन्न धुनों में चौपाई बोली जाती है और यह पात्र उनका अर्थ संवाद–षैली में करते हैं। रामायण पाठ करने वाला व्यास भी रागों को बदल कर भाव के अनुसार चौपाई पाठ करता है।

हास परिहासः भगवान राम के मर्यादा पुरूषोत्तम चरित्र के प्रदर्षन में भी मथुरा की रामलीला षैली के निर्माताओं ने उसके स्वरूप को बोझिल नहीं होने दिया है। सामान्यजन व बालकों के मनोविनोद की भी लीला–प्रसंगों में अवतरणा की गई है। नारदमोह लीला में नारदजी को बंदर–स्वरूप प्राप्त होने पर षंकरजी के गणों की व्यंगोक्तियॉ, षंकर–विवाह में भूतों की बारात, रामजन्म में भाड़ों का प्रसंग तथा धनुष–यज्ञ लीला में हास्य का मधुर वातावरण उत्पन्न करती है। ामलीला–महानाटक का खल–नायक यद्यपि रावण है परन्तु मथुरा षैली की रामलीला में हास्य के माध्यम से चालनायक की भूमिका का विकास मथुरा के कुषल हास्य कलाकारों की स्वयं विकसित की गई एक परम्परा है।

राक्षसों के दरबार में विषेष रूप में एक विदूषक को रखकर लीला की रोचकता बढ़ाई गई है, परन्तु इसमें राक्षसों या रावण की राजसभा का यह वैभवषाली रू‍प जिसके डर से देवता भी थरथराते थे, लीलाओं में नहीं उभर पाता। विदूषक के यह अलिखित संवाद कभी कभी लीला के स्तर के अनुरूप भी नहीं रह पाते क्योंकि वह अनगढ़ होते हैं जिन्हें पात्र मंच पर अवसर के अनुसार स्वयं गढ़ लेतर है। सूर्पनखा के नाक कान कटने पर उसका रोना तथा बाली या रावण की मृत्यु के उपरान्त विभिन्न वेषभूषाओं में सज्जित उसकी अनेक पत्नियों का ओार रोना तथा सापा करना भी दर्षकों में हरस्यरस की सृष्टि कर देता है।

मंच सज्जाः मथुरा रामलीला की अपनी एक महत्वपूर्ण्ण विषेषता उसकी मंच–सज्जा है। रामलीला का मंच प्रतिदिन लीला के अनुरूप नये ढंग से सजाया जाता है। बीच के मुख्य मंच के दोनों पाष्वों में दो तख्त डालकर वहॉ भी दो छोटे मंच बना दिये जाते हैं। इस प्रकार मुख्य मंच 3 लीला क्षेत्रों में बॅट जाता है। उदाहरण के लिए राम जन्म लीला को लें तो बीच का मंच जिसके आगे यवनिका होती है विभिन्न दृष्यों के लिउ सुरक्षित रखकर उसके एक ओर सिंहासन पर महाराज दषरथजी का राजसिंहासन व दूसरी ओर वषिष्ठ आश्रम बना दिया जाता है। इस प्रकार मुख्य पात्र पूरी लीला में अपने स्थान पर विद्यमान बने रह सकते हैं और उन्हें बार–बार आना जाना नहीं पड़ता। छोटे–छोटे दृष्य बीच में मंच पर प्रदर्षित होते रहते हैं। श्रीरामलीला सभा के पास अपने दो चॉदी के सिंहासन हैं जो सजावट में विषेष रूप से षोभा वृद्धि करके दर्षकों का मन मोह लेते हैं।

विषेष लीलाओं में मंच को विषेष रू‍प से सजाया जाता है। पुष्पवाटिका में जानकीजी का बाग हरियाली लगाकर बनाया जाता है और उसमें पार्वतीजी का मंदिर पुष्पों व कदली वृक्षों के गगूदे से विभिन्न उपकरण बनाकर सजाया जाता है। फूल–बॅगला बनाना ब्रज की अपनी कला है, जिसकी झलक समय–समय पर इन लीलाओं में प्रकट होती रहती है। धनुष–यज्ञ में धनुषषाला तथा राम–राज्याभिषेक में पूरी राजसभा बड़ी भव्यता से सजायी जाती है।

वेषभूषाः मथुरा की रामलीला में स्वरूपों के श्रृंगार सदा से सऊँचे सिलमा–सितारे के बनते रहे हैं। स्वरूपों को कभी कोई नकली वस्तु धारण नहीं कराई जाती। उनके वस्त्राभूषण भी पृथक रहते हैं जिन्हें कोई अन्य पात्र धारण नहीं कर सकता। मखमली बन्द गले के लाल कोट तथा रेषमी पीताम्बरी यहॉ रामजी की परम्परागत पोषाक है। पहले दषरथजी की पोषाक भेंट करने के कारण पात्रों की परम्परागत वेषभूषा कभी–कभी बदल जाती है।

प्राचीन अॅगरखे, पजामा, बगलबन्दी यहॉ की लीला की मुख्य पोषाक थे, परन्तु उनके स्थान पर अब पारसी ढंग की वेषभूषा का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। मथुरा मुकुट–श्रृंगार की स्वयं एक प्रमुख मण्ठी है, इसलिए बाजार से खरीद कर जो भक्त रामलीला के पात्रों के वस्त्र भेंट करते हैं उन्हें स्वीकार करने पर पात्रों को पहनाना रामलीला का एक कर्त्तव्य हो जाता है। रामलीला को जीवन के कार्य कलापों में उन भावों को आरोपित करना इस रीति से जीवन्नता का अनुभव करना भी लीला है और यह प्रकटन लीला–पुरूष का साक्षात्कार है लीला का परमलक्ष्य रामलीला–अभिनय रामायण काव्य पर आधारित नृत्यप्रधान एक प्रस्तुतीकरण का वर्णन है– तब वरदत्त नामवाले नट ने वज्रपुर के निवासियों को अपने नृत्य द्वारा संतुष्ट करके आनन्दित किया था। यह रामायण काव्य की कथा का नाटकीय प्रदर्षन है। इस प्रदर्षन में राक्षसराज के वधार्थ, विष्णु के अवतरण प्रस्तुत यहां राम, लक्ष्मण, भरत तथा षत्रुध्न का ऋष्ठश्रृग का, षन्ता का अभिनय स्वाभाविक रूप से किया गया है।

हरिवंष पुराण का काल चतुर्थ षताब्दी स्वीकार्य है अतः निष्चतः यह अभिनय रामायण (वाल्मीकि) पर आधारित नाट्य प्रदर्षन था। यह राम–लीला–अभिनय हजारों वर्ष प्राचीन रामचरितमानस में उत्तर काण्ड में अंकन–

चरम देह द्विज कै मैं पाई। षुर दुर्लभ पुरान श्रुति गाई।। खेलऊॅ तहूॅ बालकन्ह मीला। करउॅ सकल रघुनायक लीला।।

अर्थ–रामलीला की अभिनय की अविऊँछत्र परम्परा, परम्परिगत लोक–विस्तारिता भारतीय जनमानस की आस्था का उनके चिरन्तन विष्वास का, उनके षिव–अभिलाषा का, उनके अन्तर्मन की ईहा का, इकलौती उत्कण्ठा का, अविनाषी संश्रय, जहॉ राम का उनके चरिताख्यान का है रूपाभिनय जिसमें रामभक्त विभीषण का रागायित भाई भरत का समर्पण–भाव साक्षात् दृष्टिगत होता है–

इन सब आस्था भावों का साक्षात् रूप चतुर्थ षताब्दी से परम्परित, रामलीला–अभिनय के रूप में अविछिन्नतः प्रचलीन स्थापित है। भारत के पूरे देष में, सारे प्रदेषों में, प्रमुख नगरों में, कस्बों में, गॉवों में विस्तार इतना कि भारत के पार्ष्ववर्ती देषों की पाष्चात्य संस्कृति पर विजय सुदूर देषों में भी द्रष्टव्य है।

उत्तर प्रदेष भारत का सर्वाधिक विषाल विस्तार यहॉ भारत की संस्कृति व्सवहृति समासिकता, सौजन्यता, आस्था, विष्वास सब–कुछ अन्य प्रदेषों की अपेक्षा दृढ़ीभूत तद्वत् रामलीला–अभिनय भी यहॉ सर्वाधिक लोकानुगत, अयोध्या, वाराणसी, प्रयाग में उनकी रामलीला–विषयिकी अपनी–अपनी परम्पराऍं आज तक हैं।

प्रयाग सप्ताह भर रामलीलामय अलग–अलग दिन, भिन्न–भिन्न ढंग रामलीला–अभिनय के प्रदर्षनक्रम, अनुक्रम, यथाक्रम अटूट, कहीं साज–सज्जा उत्सव–बोध, कहीं आस्था प्रबल, कहीं विचारधारा प्रमुख, कहीं भारत का अतीत दृष्टिगत होता है। कहीं अतीत–वर्त्तमान का संग, कहीं धर्म संस्कृति का, कहीं समाज का प्रतिबिम्ब आदि रामलीला–अभिनय में रूपों धरता दृष्टिगत होता है।

प्रयाग में तीन दिनों का रामलीला–अभिनय उससे संबंध उत्सव विषेषतः गणनीय दारागंज, पथरचट्टी, पथरचट्टी–पजावा का रामदल संस्कृति की इतिहास की राष्ट्र धर्म की प्रतिष्ठा है। उसका बोध रामायण–कथा का, कथा पात्रों का रूप–स्वरूप का है। यह राम के क्रिया–कलापों का साक्षात् प्रतीक रूप है। वैभव–प्रदर्षन में कहीं अन्तर्हित, कहीं प्रतिबिम्ब, कहीं प्रतिरूप, कहीं प्रकटन, सर्वथा द्रष्टव्य है।

रामलीला–अभिनय के लिए कम, षोभायात्रा के लिए विषेषतः प्रसिद्ध प्रारंभ में दो या तीन, धीरे–धीरे अपनी–अपनी प्रतिष्ठा, मोहल्ले की प्रतिष्ठा के लिए, अब तो सप्ताह भर पूरा नगर राममय बना रहता है। दारागंज की अपनी प्रतिष्ठा तथा पृथक् पहिचान है। पृथक् नाम अन्य भागों में रामदल दारागंज का है–हनुमानदल।

यह परम्परा प्रयाग में कदाचित् सर्वाधिक प्राचीन, निष्चयतः कहना असंभव, तथापि यह परंपरा दारागंज में उन्नीसवीं षती के प्रारंभ समय में प्रारंभ हुई है। दारागंज में रामलीला–अभिनय में बड़ी कोठी का विषेष रूप से योगदान रहता रहा है। यहॉ जनसमाज में परम्परिगत जनश्रुति है कि बड़ी कोठी राय परिवार के पूर्वजों में से एक स्व0 राधारमण अग्रवाल के निधनकाल के आस–पास सन् 1913–14 की अवधि में रामलीला अभिनय का कदाचित् प्रारंभ हुआ था।

इस रामलीला–अभिनय के मूलप्रेरक स्व0 पंडित ठाकुरप्रसाद वैद्यमणि, स्व0 पंडित बेनीराम पाधा तथा स्व0 पंडित षेषधरजी रहे हैं। इनकी प्रेरणा से राधा मंदिर की श्रीमती

झलरा कुॅवरि देवी ने प्रारंभिक स्थिति में रामलीला–अभिनय–निमित्त प्रभूत धनराषि प्रदान कर सहयोग दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने जगन्माता जानकी के लिए चांदी की एक चौकी भी बनवायी जो रामलीला कमेटी के लिए अनमोल निधि बनी। इस प्रकार दरागंज में रामलीला–अभिनयका सूत्रपात श्रेय वस्तुतः राधामंदिर की देवी झलरा कुॅवरि को उनकी उदारता आस्था–संस्कृति के रूप, रात के प्रति श्रद्धा –भक्ति को अक्षुण्ण रखने के लिए तथा उनके पश्चात् राय द्वारिकाप्रसादजी जीवनपर्यन्त उदारतापूर्वक सहयोग देते रहे। दारागंज की रामलीला के अभिनय का प्रथम चरण यह रहा है।

दारागंज, सामासिक संस्कृतिक सामासिक चिन्तन–धारा उएक सर्वधर्म–समभाव का प्रतीक है। पारस्परिक सौहार्द, सामाजिक सौजन्य, वैचारिक समानता, हार्दिक सद्भाव, मानसिक, औदार्य, सामाजिक सहिष्णुता, धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक विष्वास, जातीय पार्थक्य व्यवहृति–अभिन्नता इस दारागंज संस्कृति की सबसे बड़ी विषेषता है। रामलीला–अभिनय में जन–जन का प्रयास निर्बाध चलता रहा। परम्परा दषनामी संन्यासियों के दो मठ अखाड़े निर्वाणी, निरंजनी मठ तथा बाघम्बरी मठ हैं। स्व0 राधारमण अग्रवाल का प्रतिष्ठित कुल तथा सभी की सर्वतोभावेन सहभागिता, सहयोग, उत्साह–संवर्द्धन, लोक–भावना का लोक समुदाय का सक्रिय समर्थन रामलीला–अभिनय निरन्तरता की ओर अग्रसर निवासियों के लिए एक पहचान एक प्रतिष्ठा है। रामलीला–अभिनय का प्रभाव भावात्मक जागरण, आत्मिक अभ्युदय, सर्वोदयी दृष्टि का उन्मीलन, जाति–वर्ग–समुदाय सबका सहयोग है। मुसलमान भी रामलीला–अभिनय के प्रति सहभागी हैं। प्रयाग के एक लघु जनस्थान की प्रतिष्ठा इस

रामलीला–अभिनय में उत्तरोत्तर स्तरोन्नयन, निखार की अभिलाषा प्रकट करती है।

प्रयाग और रामकथा का बहुत घनिष्ठ संबंध है। तुलसीदास ने लिखा है कि भरद्वाज प्रयाग में बसते हैं, उनका राम के चरणों में विषेष अनुराग है। तीर्थराज–प्रयाग में जो ऋषि–मुनि स्नान के लिए आते हैं, वे उनसे भगवान के गुणों की कथाएं सुनते हैं। एक बार भरद्वाज ने याज्ञवल्क्य से रामकथा सुनने की इ‍ॅछा जाहिर की। रामकथा के वक्ता–श्रोता की परंपरा में यह महत्वपूर्ण घटना है। रामकथा को त्रिवेणी का रूपक प्रदान किया गया है। प्रयाग के पास श्रृंगवेरपुर के राजा गुह के साथ राम ने जिस तरह की आत्मीयता एवं प्रेम भाव प्रकट किया, वह रामकथा को उत्कर्ष प्रदान करता है। राम की लीला का महत्वपूर्ण क्षेत्र होने के कारण यदि जनमानस का रामलीला के प्रति गहरा लगाव है तो उसमें किसी तरह का आष्चर्य नहीं है। प्रयाग में विभिन्न मुहल्लों में अलग–अलग रामलीलाएँ और भरत मिलाप होता है। दषहरा के पहले ही दारागंज, कटरा, अल्लापुर, सिविल लाइन्स में रामकथा से संबंधित अनेक झॉकियॉ निकलती हैं और अपने–अपने तरीके से बहुत बड़े जनसमूह की धार्मिक भावना को तृप्त करती हैं।

अल्लापुर जिसका दूसरा नाम भरद्वाजपुरम् है, अन्य क्षेत्रों की तुलना में नया है, भरद्वाज ऋषि के आश्रम के अत्यंत समीप होने का गौरव इसे प्राप्त है। अल्लापुर के चारों ओर रेल लाइन है, एक तरह से रेल पटरियों से ही इसकी सीमा निर्धारित होती है। इस बड़े मोहल्ले में अनेक उपमोहल्ले हैं जैसे–किदवई नगर, बाघम्बरी गद्दी, मोहिल नगर, रामानन्द नगरतिलकनगर आदि। यह मोहल्ला ज्यादा–से–ज्यादा 40 वर्ष पुराना है। यहॉ बस्ती बनने के पहले एक किनारे कुछ घरों का पुराना अल्लापुर था। उत्तरी–पष्चिमी क्षेत्र और उत्तरी–पूर्वी क्षेत्र में मुसलमानों के दो कब्रिस्तान हैं। सम्भवतः इसीलिए इसे अल्लापुर नाम दिया गया। यहॉ बहुत–से सरकारी कर्मचारी, प्रधानाध्यापक, वकील और बड़ी संख्या में विष्वविद्यालय के छात्र रहते हैं। यहॉ बसनेवाले नागरिक पूर्वी उत्तर प्रदेष, बिहार, पष्चिमी उत्तर प्रदेष, मध्य प्रदेष आदि के ग्राम अ‍ॅचलों से आये हैं। सबकी अपनी–अपनी स्थानीय लोक–संस्कृतियॉ रही हैं, जिन्हें वे अपने घरों में जीवित रखने का प्रयत्न करते हैं। राम के प्रति निष्ठा तथा भक्ति प्रायः सभी लोगों में है। यही कारण है कि सबने एक मन, एक भाव से अल्लापुर में रामलीला कराने का संकल्प लिया 1975 में बाघम्बरी क्षेत्र, श्रीरामलीला कमेटी, भरद्वाजपुरम् की स्थापना हुई। पं0 अमृतलाल तिवारी कमेटी के संस्थापक अध्सक्ष रहे। सन् 2001 को पत्रिका अक्षय में तिवारीजी ने जो उद्‌गार व्यक्त किया है उससे रामलीला की महत्ता और आयोजनों की गुणवत्ता का बोध होता है–

कमेटी के पूर्व अध्यक्षों, महामंत्रियों, संस्थापक सदस्यों के अथक प्रयासों और कड़ी मेहनत के द्वारा आज पथरचट्टी–पजावा–जैसी बड़ी पुरानी रामलीला कमेटियों के समानान्तर ख्याति अर्जित कर यह कमेटी रामलीला के इतिहास में विषिष्ट स्थान प्राप्त कर भरद्वजपुरम् का गौरव बढ़ रही है। वे सब बधाई एवं आषीष के पात्र हैं। स्मारिका, संपादक एवं अध्यक्ष श्री लालताप्रसाद पाण्डेय एवं महामंत्री संजीव कुमार वाजपेयी के अथक प्रयासों एवं विषेष आर्थिक सहयोग का ही परिणाम है।

यहॉ की रामलीला के चार आयाम हैं। दषहरा के समय पूरे दस दिन तक रामकथा से संबंधित मार्मिक प्रसंगों की रामलीला मण्डली द्वारा नाटकीय प्रस्तुति की जाती है। इसके लिए रामलीला पार्क में पक्का तुलसी मंच बना हुआ है। सैकड़ों दर्षक प्रतिदिन राम के कर्म का प्रत्यक्ष दर्षन करते हैं। इससे उनका मात्र मनोरंजन ही नहीं होता बल्कि जीवन में संघर्ष करने की प्रेरणा भी मिलती है। राम ने किस तरह जीवन की अनेक कठिनाइयों एवं विपदाओं से जूझते हुए रावण–जैसे आततायीलोकपीड़क राक्षस का वध किया, उन सबको देखकर दर्षकों में अद्‌भुत साहस का संचार होता है। हनुमानजी का विरतापूर्ण कर्म छोटे ब‍ॅचों को रोमांचित कर देता है। भक्तों ने राम के नाम के महम्व को प्रतिपादित किया है किन्तु रामलीला के द्वारा राम के विविध कर्मों की झॉकी जनता पहुॅचायी जाती है।

दशहरा के समय किसी एवे रात्रि को भरत–मिलाप का अयोजन होता है। पूरा क्षेत्र विद्युत् की सजावट से अलोकित हो उठता है। ध्वनि विस्तारक यंत्रों द्वारा भजन, कीर्त्तन, गायन तथा राष्ट्रीय गीतों का प्रसारण तीव्र ध्वनि में होता है। चौराहों पर बड़े–बड़े तोरण सुसज्जित किये जाते हैं औश्र बिजली के द्वारा अनेक तरह की प्रकाष तरंगें निर्मित की जाती हैं। रंग–बिरंगें बल्बों का विषेष आकर्षण रहहहता है। राम में राम, लक्ष्मण, सीता , भरत आदि की झॉकियों के द्वारा

प्रदर्षित किये जाते हैं। झॉकियॉ सामाजिक समस्याओं से संबंधित होती हैं, जो जनता का ध्यान सामाजिक बुराइयों की ओर आकर्षित करती हैं और उनके सुधार का संकेम देती हैं। अंत में , भरत राम का मिलन होता है, जो सबसे अधिक मार्मिक प्रसंग माना जाता है।

यह आयोजन व्यवस्था की पुष्टि से अत्यंत चुनौतीपूर्ण होता है। राम भले ही प्रतिवर्ष रावण की हत्या करते हैं लेकिन रावण तत्व पूरी तरह कभी विनष्ट नहीं होता है। अतः रामलीला को इन तत्वों से बचाने के लिए जिला प्रषासन, पुलिस बल, जनप्रतिधि एवं कमेटी के पदाधिकारी पूरी रात जागकर आयोजन को निर्विघ्न बनाने की चेष्ठा करते हैं।

रामलीला का तीसरा आयाम राष्ट्रीय स्तर पर कवि–सम्मेलन है। किसी रामलीला कमेटी द्वारा स्तरीय कवि–सम्मेलन के समन्वयक का दायित्व प्रोफेसर राजेन्द्र मिश्र को सौपा गया। प्रो0 राजेन्द्र मिश्र, इलाहाबाद विष्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के आचार्य रहे हैं। वे स्वयं हिन्दी, संस्कृत के प्रतिष्ठित कवि हैं इसके बाद इलाहाबाद विष्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के आचार्य प्रोफेसर हरिनारायण दुबे ने संयोजन का दायित्व सम्हाला। कवि–सम्मेलन में नीरज, सोम ठाकुर, ब्रजेन्द्र अवस्थी, ष्यामनारायण पाण्डेय, डॉ0 जगदीष गुप्त, डॉ0 मोहन अवस्थी, श्रीपालसिंह क्षेम, कैलाष गौतम आदि अनेक प्रतिष्ठित कवियों ने भाग लिया। इन कवियों की कविताओं को सुनकर महीनों तक छात्र उनके स्वर का अनुकरण करते हुए गीत गुनगुनाने का सफल–असफल यत्न करते हैं। बहुत–से नये कवि उनकी की पंकितयों कसे अदल–बदलकर अपनी रचना बना लेते हैं। कविता को जनसाधारण के बीच लोकप्रिय बनाने में कवि–सम्मेलन की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।हास्य और व्यंग्य की कविताओं को सुनने की विषेष चाह दर्षक में दिखाई देती है। बेढब बनारसी, सॅूड़ आदि हास्य–व्संग्य के कवि जनता के लिए विषेष आकर्षण के केन्द्र होते हैं। प्रतिवर्ष कवि–सम्मेलन के आयोजन का दायित्व अलग–अलग व्यक्तियों को दिया जाता है और उनका प्रयत्न रहता है के देष के कोने–कोने से प्रतिष्ठित गीतकार आर व्यंग्यकार को बुलाया जाय। चूॅकि श्रोताओं में विष्वविद्यालय के छात्रों की संख्या बहुत अधिक होती है, इसलिए स्तरहीन कवियों का मंच पर टिकना संभव नहीं होता। कवि–सम्मेलन के लिए उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा आर्थिक सहयोग भी प्राप्त होता है। कवि–सम्मेलन का उद्घाटन नगर के अतिप्रतिष्ठित व्यक्ति के द्वारा कराया जाता है। जनप्रतिनिधि, प्रषासनिक अधिकारी, मंत्री आदि मंच पर विराजित होकर न केवल कविता का आस्वादन करते हैंबल्कि रामलीला कमेटी के सदस्यों का उत्साहवर्द्धन भी करते हैं। कवि सम्मेलन के मंच पर कभी विधानसभा अध्यक्ष, षिक्षामंत्री, आयुक्त, जिलाधिकारी औरकभी हाईकोर्ट के माननीय न्यायाधीष, कभी महापौर को विराजित देखा जा सकता है।

उपसंहार

रामलीला कमेटी की ओर से 'अक्षय' नाम की पत्रिका का प्रकाषन प्रतिवर्ष किया जाता है। इसमें रामकथा से संबंधित अनेक लेख प्रकाषित होते हैं। लेखों के साथ कविताओं का भी प्रकाशन होता है। इसमें प्रकाषन के लिए भारत के विविध क्षेत्रों के लेख आमंत्रित किये जाते हैं और उन्हें पत्रिका में सम्मिलित किया जाता है। विश्वविद्यालय, महाविद्यालय के ऐसे विद्वानों के भी शोधपूर्ण लेख इस पत्रिका में दृष्टिगत होते हैं जिनका संबंध समाज विज्ञान या प्राकृतिक विज्ञान से है। आम तौर पर यह माना जाता है कि इस तरह तरक कि पत्रिकाओं में प्राकषित सामग्री बहुत हल्की–फुल्की होती होगी लेकिन 'अक्षय' पत्रिका इसका अपवाद है। इसमें शोधपूर्ण एवं स्तरीय लेख प्रकाषित होते हैं। 2001 के अंक में आचार्य विष्णुकान्त षास्त्री का लेख प्रकाशित हुआ है जिसका शीर्षक है 'राम का नाम नहीं राम का काम भी'। इस लेख में उन्होंने अनेक उद्धरणों द्वारा राम के नाम के साथ ही उनके काम के महत्त्व को प्रतिपादित किया। राम के द्वारा किये गये कार्य मनुष्य द्वारा आज भी करणीय हैं। रामलीला तथा पत्रिका प्रकाशन के विषय में भारत के सत्ता केन्द्र तक सूचनाएं भेजी गयी हैं और समय–समय पर भारत के राष्ट्रपति से लेकर मानव संसाधन मंत्री, प्रदेष के शिक्षामंत्री, आयुक्त, जिला अधिकारी आदि ने अपनी शुभकामनाओं से सम्पूर्ण आयोजन को सार्थ बनाया और उसकी राष्ट्रीय महत्ता को स्वीकार किया। सभी राजनीतिक दलों के नेता रामलीला मंच पर समभाव से उपस्थिति होते हैं। रामलीला आज के समाज को प्राचीन गौरवमयी परम्परा से जोड़ती है। राम के आदर्शों, मान्यताओं और मूल्यों की सार्थकता को आधुनिक संदर्भ में स्थापित करती है। यही कारण है कि रामलीला का आयोजन भारत के विभिन्न क्षेत्रों में उत्साहपूर्वक सम्पन्न होता है। प्रयाग की रामलीला का उनमें विशेष महत्व है। प्रयाग में भी बाघम्बरी क्षेत्र अल्लापुर की रामलीला ने अल्प समय में ही अपना उल्लेखनीय स्थान बनाया है।

सन्दर्भ सूची

1. बुल्के,कामिल–2015,रामकथा की उत्पत्ति और विकास, हिन्दी परिषद् प्रकाशन, पृ0–158

2. सकलानी,डी0पी0–2013,रामायण ट्रैडिशन इन परफोर्मिंग आर्ट, अश्वनी अग्रवाल द्वारा सम्पादित–लीगेसी ऑफ इण्डियन आर्ट, आर्यन बुक्स इण्टरनेशनल, प्रथम संस्करण, पृ0–159

3. तिवारी,चन्द्रशेखर–2011,कुंमाऊं अंचल में रामलीला की परंपरा, दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र, देहरादून, पृ0–7

4. बहुगुणा,अद्वैत–2014,सागर से हिमालय तकः रामलीला, वीरेन्द्र खंकरियाल द्वारा सम्पादित नमामि रामम्, खबरसार प्रकाशन, पौड़ी,पृ0–22

5. रावत,सम्पूर्ण सिंह–2015,स्मृति के दर्पण में, अश्वनी कोटनाला द्वारा सम्पादित स्मृति के शिलालेख, विनसर प्रकाशन,पृ0–40

6. लोहनी,भोलादत्त–2015, बातें जो इतिहास का हिस्सा बन गईं, अश्वनी कोटनाला द्वारा सम्पादित स्मृति के शिलालेख, विनसर प्रकाशन,पृ0–22

7. ढौंडियाल,अजयशंकर–2015,जयहरीखाल रामलीला की यात्रा, अश्वनी कोटनाला द्वारा सम्पादित स्मृति के शिलालेख, विनसर प्रकाशन,पृ0–47

8. जोशी,प्रभाकर–अक्टूबर 2015,भगवान राम की जन्मस्थली देवप्रयाग की रामलीला, गणेश खुगशाल द्वारा सम्पादित धाद, प्रगति प्रिंटिग प्रेस, पौड़ी, पृ0–6

9. रावत,अजय–अक्टूबर 2015, धार्मिक सामाजिक आयोजन छ धारी कि रामलीला, गणेश खुगशाल द्वारा सम्पादित धाद, प्रगति प्रिंटिग प्रेस, पौड़ी, पृ0–20

10. जोशी,शैलेन्द्र–अक्टूबर 2015,भगवान कमलेश्वर की धरती मा रामलीला, गणेश खुगशाल द्वारा सम्पादित धाद, प्रगति प्रिंटिग प्रेस, पौड़ी,पृ0–12

11. पंवार अजीत–2014, उत्तराखं डमें रामलीला की समृद्ध परंपरा, वीरेन्द्र खंकरियाल द्वारा सम्पादित नमामि रामम्, खबरसार प्रकाशन पौड़ी, पृ0–17

12. रावत,विनोद–2014, श्री रामलीला मंचन पौड़ी से सम्बन्धित कुछ तथ्य, वीरेन्द्र खंकरियाल क्षरा सम्पादित नमामि रामम्, खबरसार प्रकाशन पौडी, पृ0–38

13. कोटनाला,अश्वनी–2015, पर्दे के पीछे कुछ यूँ हुई रामलीला, अश्वनी कोटनाला द्वारा सम्पादित स्मृति के शिलालेख, विनसर प्रकाशन, देहरादून, पृ0–59

14. रावत,विनोद–2014, श्री रामलीला मंचन पौड़ी से सम्बन्धित कुछ तथ्य, वीरेन्द्र खंकरियाल द्वारा सम्पादित नमामि रामम्, खबरसार प्रकाशन, पौड़ी,पृ0–36